१०५. जय बोलो मैहरी प्रभाती

जय बोलो मैहरी प्रभाती, अरुण देत ललकार
मंगलमय आनंद प्रभूजी, लीनो है अवतार ॥धृ.॥

समय समयपर आकर उसने प्रेमामृत पिलवाया
अंधकारमे फँसे मनुजको जिसने मार्ग दिखाया
आज वही फिरसे आया है, सुनलो प्रेम पुकार ॥१॥

Scanned by CamScanner

धरा हुवी है पावन फिरसे, पाकर रघुराई
बुद्ध खिस्त झरथृष्ट्र मुहंमद यदुनाथ कन्हाई
साचे धर्म की ज्योत जलाई, जिसने बारंबार ॥२॥

महानाशका समय हुवा है, हमने ही है लाया
त्राही त्राही दाही दिशामे, शोर उसीका पाया
वचन मे बंधा हमे बचाने, खडा है हाथ पसार॥३॥

उठो मानवो ! शरणमे जावो, दर तुम्हरे श्रीहरी
करो आरती मंगल गावो, बोलो जय मैहरी
मधुसूदन जिन कर प्रभु दामन, उसकी नैया पार ॥४॥

Scanned by CamScanner